IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''वर्तमान प्रदृ"य मे सरकारो के लिए बजट की प्रसंगिकता''

(भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत बजट के वि"ोश संदर्भ में।)

डॉ0 आलोक सिंह

एसोसिएट प्रोफेसर

वाणिज्य संकाय,

श्री गणे"ा राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,

डोभी, जौनपुर(यू0पी0)

भाोध–सार

वर्तमान समय में बजट सभी प्रकार के सरकारो के लिए वित्तीय प्र"ाासन का एक महत्वपूर्ण साधन है। वर्तमान समय में लग–भग सभी सरकारे अपने नागरिको को अधिकत्तम सुख सुविधा प्रदान करना चाहती है तथा अपने नागरिकों के जीवन स्तर को भी उपर अठाना चाहती है साथ ही आर्थिक असामानता को भी कम करना चाहती है।इसके लिए बजट ही वह साधन है जो सराकरो के इस लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद कर सकती है। बजट वह धुरी है जिसके चारो ओर राज्य की समस्त वित्तीय गतिविधियाँ घूमती है। यह राज्य की वित्तीय कर्यो की सीमा निर्धारित करता है। दे"ा के आर्थिक विकास की रूप रेखा के निर्माण में बजट का बहुत ज्यादा ही महत्व है। बजट वित्तीय प्र"ाासन की धूरी है, यह किसी दे"ा के आधुनिक अर्थव्यवस्था में, राजकोशीय नीतियों के प्रभावी ढ़ग से लागू करने का एक साधन है। बजट उद्योग, कृशि आदि को सब्सिडी देकार उनकी रक्षा कर सकता है या उत्पादकता को बढा सकता है। यह आय के वितरण की असामानतो का निवारण कर सकता है। बजट दे"ा की अर्थव्यवस्था का आईना होता है। यह दे"ा के वित्तीय प्र"ाासन को चलाने एवं राजकोशीय नीति को लागू करने का एक साधन है।

भूमिका

भाब्द[1] 'बजट' फ्रांसीसी भाब्द 'बूगैट'(Bougette) से लिया गया है जिसका अर्थ 'चमडे के थैले' से है। सन् 1733 मे ब्रिटि"ा वित्तमंत्री सर रॉबर्ट वॉलपोल ने अपने वित्तीय प्रस्तावों से सम्बन्धित कागज संसद के सामने पे"ा करने के लिए एक चमडे के थैले से निकाला तो उनका मजाक अड़ाते हुए बजट खोला गया नामक पुस्तक प्रकाि"ात की गयी उसी समस से 'बजट' भाब्द का प्रयोग सरकार की वार्शिक आय–व्यय के विवरण के लिए किया जाने लगा।

बजट की आवधारणाः–

बजट में आय–व्यय के अनुमान लगाये जाते है, इन व्ययो को करने के लिए विभिन्न साधनों व पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है। यह आय–व्यय का वार्शिक विवरण होता है। दूसरे भाब्दो मे बजट सरकार की वित्तीय योजना का विवरण होता है। आधुनिक काल में बजट भाब्द का अर्थ है–वह आलेख जिसमें प्रायः एक वर्श की नि"चित अवधि के लिए दे"ा के आय–व्यय के अनुमान सम्मिलित होते है। बजट वह धुरी है जिसके चारो ओर राज्य की वित्तीय गतिविधियाँ घूमति है। यह सभी वित्तीय कार्यो की सीमा निर्धारित करता हैं। 'बजट'[2] गत वर्श के राजस्व–व्यय के वास्तविक आंकड़े, चालू वर्श के लिए पारित किये गए आँकड़े, अर्थात 'बजट अनुमान' एवं चालू वर्श के अनुमानित वास्तविक आकडे, अर्थात सं"ोधित अनुमान' तथा आने वाले वर्श के लिए प्रस्तावित अनुमान अर्थात 'बजट अनुमान' कों द"ार्ाता ह।

''बजट एक नि"चत अवधि के अर्न्तगत होने वाली अनुमानित प्राप्तियों तथा खर्चों का एक विवरण है, यह एक तुलनात्मक तालिका है जिसमें उगाही जाने वाली आमदनियों तथा किये जाने वाले खर्चों की धनरा"ायाँ दी हुई होती है; इसके अतिरिक्त, यह आय का संग्रह करने तथा खर्च करने के लिए उपयुक्त प्राधिकारियों द्वारा दिया गया एक आदे"ा अथवा अधिकार है।''[3]

''बजट एक ऐसा लेखपत्र है, जिसके द्वारा मुख्य कार्यपालिका धन प्राप्त करने वाली तथा व्यय की स्वीकृति देने वाली सभा के समक्ष इस बात का प्रतिवेदन करती है कि गत वर्श उसने तथा अधीनस्थ कर्मचारियों ने प्र"ाासन का संचालन किस प्रकार से किया, लोक कोशागार की वर्तमान स्थिति क्या है, इन सूचनाओं के आधार पर आगामी वर्श का अनुमान क्या है तथा प्रस्ताव क्या है?।''[4]

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 112 में बजट को निम्नानुसार परिभाशित किया गया है–

''प्रत्येक वित्तीय वर्श के प्रारम्भ पर राश्ट्रपति वित्तीय वर्श के सम्बन्ध में संसद के दोनो सदनो के समक्ष भारत सरकार की उस वर्श के लिए

प्राक्कलित प्राप्तियों और व्यय का विवरण रखता है। इसे 'वार्शिक वित्तीय विवरण' अर्थात बजट कहा जाता है। इसमे प्राक्कलित व्यय के पूर्ति के लिए अर्थोपाय भी दिए जाते है।''[5]

'बजट' भाब्द विधायिका को उसकी मंजूरी के लिए प्रस्तुत वित्तीय योजना एवं विधायिका द्वारा पारित होने के बाद की योजना दोनो को इंगित करता है। भारत में 'बजट' भाब्द का प्रयोग हमारी संसद में वार्शिक वित्तीय विवरण में व्यय के प्राक्कलन के साथ–साथ राजस्व प्राप्ति के लिए अर्थोपाय भी अंतर्विश्ट होते है।

बजट की वि"ोशताऐं :–बजट की मुख्य वि"ोशताऐं इस प्रकार है–

- बजट एक प्रक्रिय है, जिसमें बहुत सारे प्रक्रियाओं का पालन किया जाता है।
- बजट एक पूर्ण वित्तीय विवरण को सम्पूर्ण वर्श के लिए द"ार्ाता है।
- बजट एक नि"चत अवधि के लिए तैयार किया जाता है, जो सामान्यतः एक वर्श के लिए होता है जिसे बजट वर्श भी कहा जाता है। भारत में बजट अवधि की भुरूवात 1 अप्रैल सें होती है, जो अगले वर्श 31 मार्च को समाप्त होता है।
- बजट एक योजना या कार्यक्रम होता है, जो पिछले अनुभव के आधार पर बनाया जाता है तथा यह योजना व्यवस्थित एवं संगठित होती है।
- बजट को वित्तीय रूप या नगद में तैयार किया जाता है
- बजट को सकल रा"ि के आधार पर तैयार किया जाता है एवं आय–व्यय को अलग–अलग दिखाया जाता है।
- बजट हमे"ाा एक वि"ाश्ट तिथि स पहले तैयार किया जाता है।
- बजट इस प्रकार से तैयार किया जाता है ता कि आर्थिक प्रगति के बारे में ज्ञान प्राप्त किया जा सके।
- भारत सरकार ने बजट को दो भागो में वर्गीकृत किया है प्रथम–राजस्व एवं द्वितीय–पूंजी बजट
- बजट को मंजूरी के लिए किसी प्राधिकरण या निकाय की आव"यकता होती है। संसदीय लोकतंत्र मे, बजट को मंजूरी के लिए संसद या विधायिका के समक्ष प्रस्तुत एवं पास किया जाता है।

कु"ाल बजट के आव"यक तत्वः– बजट किसी भी सरकार की राजकोशीय अथवा वित्तीय प्रबन्ध की कला है। यह न्यूनतम आगतों से अधिकत्तम उत्पाद प्राप्त करने की कला है। बजट एक ऐसा उपकरण है लिसके द्वारा सरकार अर्थव्यवस्था को नियमित एंव नियंत्रित करती है, उसको एक भी"ो के समान सरकार की राजकोशीय नीति से सही स्वभाव को प्रतिबिंबित करना चाहिए और अर्थव्यवस्था के

कार्य संचालन में सरकार की भूमिका का बिना किसी भराइ अथवा आवरण के स्पश्ट चित्र प्रस्तुत करना चाहिए और इसलिए प्रत्येक विभाग के लिए प्रस्तावों तथा अनुमानो को,जहाँ तक संभव हो , वास्तविकता के निकट होना चाहिए।

एक कु"ाल बजट के आव"यक तत्व निम्न है[6]:—

1—जिम्मेदारीः—दे"ा में बजट तैयारी के लिए संविधान को किसी वि"ोश प्रधिकारी को जिम्मेदार बनाना चहिए। भारत समेत राश्ट्रमण्डल दे"ाों में बजट की तैयारी तथा प्रस्तुतीकरण का कार्य वित्त मंत्रालय द्वारा किया जाता है और संपूर्ण मंत्री परिशद् की सामूहिक जिम्मेंदारी होती है।

2—आयोजनः—कार्यपालिका द्वारा प्रस्तुत बजट को सरकार का विधान मंडल, उसमें दिये गये कार्यक्रमों के आधार पर पारित करता है।

3—रिपोटिंगः—विभिन्न विभागों द्वारा दी गयी रिपोर्ट तथा वित्तीय सूचनाओं क आधार पर बजट बनाया या तैयार किया जाता है।

4—अधिकार अथवा सत्ताः— बजट की तैयारी तथा उसके कियान्वयन के लिए मुख्य अधिकारी को पूरा अधिकार तथा प्र्याप्त सुविधाएं दी जानी चाहिए।

5—विविधता में एकताः— वर्तमान समय में एक सरकार को अनेक कार्य करने पड़ते है जिसमें कुछ वि"ाुद्ध रूप से प्र"ाासनिक, कुछ वाणिज्यक.....प्रत्येक स्वभाव में भिन्न है और प्रत्येक के लिए प्रबन्ध की भिन्न तकनीक की आव"यकता होती है।

6—कार्यकारी मार्गद"ार्नः— बजट लोक प्र"ाासन का एक उपयोगी औजार है। इसको प्रभावी बनाने के लिए यह आव"यक है कि बजट प्रलेख में सभी संभव बाते प्रत्येक परियोजना के सम्बन्ध में दी जाय

7—समय का लचीलापनः— एक सार्वजनिक बजट कार्यक्रम अथवा परियोजना को पूरा करने की अवधि तथा समय लचीला होना चाहिए।

8—सभी विभागों का सकिय योगदानः—बजट सभी विभागो तथा प्र"ाासनिक इकाईया द्वारा प्रदान की गयी सूचना से तैयार किया जाता है इसलिए आव"यक है कि मुख्य कार्यकारी के केन्द्रीय बजट दफ्तर कों सभी विभागों से सूचना का निरन्तर प्रवाह होता रहे।

वर्तमान समय में बजट की प्रासंगिकताः–

बजट वर्तमान समय में दे"ाो के वित्तीय प्र"ाासन का एक प्रमुख साधन बन गया है। बजट सरकार की बृहद् वित्तीय योजना होती है। यह अनुमानित आय और प्रस्तावित व्यय, किए जाने वाले कार्यो तथा उन कार्यो की वित्तीय व्यवस्था के साधानो को इकट्ठा प्रस्तुत करता है। बजट प्रजातंत्रीय सरकार की आधारि"ाला है, आर्थिक एवं सामाजिक परिवर्तनो का एक प्रभावी साधन है। यह उस आधार की तरह है जिसके बिना कोई दे"ा स्थायी सामाजिक प्रगति नही कर सकता है। यह राज्य के कार्यक्रमों को दक्षतापूर्वक लागू करने का आधार भूत साधन है।

बजट वह धुरी है जिसके चारो ओर राज्य की समस्त वित्तीय गतिविधियाँ घूमती है। यह राज्य की वित्तीय कर्यो की सीमा निर्धारित करता है। दे"ा के आर्थिक विकास की रूप रेखा के निर्माण में बजट का बहुत ज्यादा ही महत्व है। बजट वित्तीय प्र"ाासन की धूरी है, यह किसी दे"ा के आधुनिक अर्थव्यवस्था में, राजकोशीय नीतियों के प्रभावी ढ़ग से लागू करने का एक साधन है। दे"ा की आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक प्रगति बजट की सफलता पर निर्भर करती हैं, जो बजट सिद्धान्तो पर आधारित होती है। बजट उद्योग, कृशि आदि को सब्सिडी देकार उनकी रक्षा कर सकता है या उत्पादकता को बढा सकता है। यह आय के वितरण की असामानतो का निवारण कर सकता है। बजट दे"ा की अर्थव्यवस्था का आईना होता है। यह दे"ा के वित्तीय प्र"ाासन को चलाने एवं राजकोशीय नीति को लागू करने का एक साधन है। दे"ा के आधुनिक अर्थव्यवस्था में इसका महत्वपूर्ण स्थान है दे"ा के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक प्रगति बजट पर ही निर्भर करती है। बजट द्वारा सरकार विधायिका के माध्यम से अपने नीतियो को लागू कर सकती है।

प्राचीन समय की तुलना में अब बजट का आकार में अपार वृद्धि हुई है। राश्ट्रीय अर्थव्यवस्था को प्रभावीत करने में इसकी क्षमाता में वृद्धि हुई है। सरकार की गतिविधियँ सार्वजनिक बजटों द्वारा द"ार्ायी जाती है और वे राश्ट्रीय आय के उत्पादन एवं वितरण तथा दे"ा के साधनों के उपयोग को प्रभावित करती है। अतः बजट की सहायता से सरकार कराधान, व्यय और उधारी सम्बन्धी नीतियो द्वारा आर्थिक किया के स्तर पर भाक्ति"ाली दबाव डाल सकती है। इसी कारण वान फिलिप्स ने कहा कि ''अर्थव्यवस्था पर उसकी कसी हुई तथा प्रत्यक्ष पकड़ के कारण बजटकी श्रेंश्ठताहै, बजटीय नीति के परिणाम अधिक प्रत्यक्ष होते है''

वर्तमान समय में बजट की प्रासंगिकता को निम्न विन्दुओ से दिखाया जा सकता है–

- बजट प्र"ाासनिक कु"ालता का बैरोमीटर है, प्र"ाासनिक कु"ालता तभी कहा जाता है जब व्यय स्वीकृत बजट के अनुसार किया गया है तथा उस मद में जिस मद मे बजट स्वीकृत किया गया है कोई व्यय अधिक या कम न हो यदि कम या अधिक होता है तो यह अक्षमता का प्रतीक माना जाता है। बजट समन्वय के एक भाक्ति"ाली साधन और दोहराव एवं अपव्यय को खत्म करने का एक प्रभावी उपकरण के रूप में कार्य करता है।
- बजट प्र"ाासनिक जवाबदेही को तय करती है। वि"ोशकर लोकतांत्रिक दे"ाो में जहाँ पर सरकार जनता के धन का उपयोग जनता के भलाई के लिए करती है।
- बजट राजकोशिय नीति का साधन है, अर्थात अर्थव्यवस्था के संचालन एवं दि"ाा बदलने का एक उपकरण है। सार्वजनिक ऋण के समुचित प्रबंधन के साथ कराधान और सार्वजनिक व्यय की संरचना एवं आर्थिक उद्दे"यों को आगे बढ़ाने के लिए मुख्य उपकरण में बजट एक है।
- बजट द्वारा सरकार सार्वजनिक निधियो पर नियंत्रण करती है जिसे सरकार विधायिका के माध्यम से सम्पन्न करती है।
- बजट सामाजिक कल्याण का आधार है, जो धन एवं आय की असामानता को कम करने में सरकार को सहायता प्रदान करता है। इसी लिए सरकार उच्च आय वर्ग सें बढ़ती हुई दर से कर लगाती एवं गरीबो से कोई कर नही लेती है बल्कि गरीबो को घर स्वास्थय, ि"ाक्षा, रोजगार, सामाजिक सुरक्षा आदि सुविधायें प्रदान करती है।
- बजट के माध्यम से सरकार उत्पादन को बढ़ा सकती है, छोटे उद्योगो, कृशि आदि को सुरक्षा प्रदान कर उन्हे सब्सिड़ी भी प्रदान कर सकती है अर्थात उन उद्योगो को संरक्षण प्रदान कर सकती है जिन्हे वह आव"यक समझती है। इसके अलावा अन्य प्रकार का प्रोत्साहन दे कर के उद्योगो के उत्पादन को बढ़ा सकती है।
- बजट आर्थिक स्थिरता को बनाये रखने का एक उपकरण है। सरकार दे"ा की आर्थिक स्थिरता के लिए स्फीति काल में बचत का बजट एवं मंदी काल में घाटे का बजट बना कर उत्पादन उपभोग एवं रोजगार को बढ़ा सकती है।
- बजट दे"ा की अर्थव्यवस्था का प्राण रक्त है, जो आर्थिक क्रिया को मूल्यांकित करने का एक साधन है जो सरकार को आर्थिक एवं राजनीतिक मूल्यांकन के लिए अवसर प्रदान करता है। बजट समन्वय का एक मजबूत उपकरण है। यह सामाजिक एवं आर्थिक प्रगति के अनुमान लगाने में भी सहायक है।
- बजट सत्तारूढ दल की नीतियो, कार्यक्रमो और विचार धाराओ को लागू करने का एक उपकरण है। आधुनिक कल्याणकारी राज्य में सरकार एक सामाजिक

प्रर्वतक की भूमिका में है। इसके लिए वह जनता को न सिर्फ अधिकाधिक सुख–सुविधाये प्रदान करती है अपितु सामाज के कमजोर वर्गो की स्थिति में गुणात्मक सुधार लाना चाहती है। जो बजट द्वारा ही संभव है।

➢ लोक कल्याणकारी भवना ने सरकार को अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप करने क लिए प्रेरित किया। सरकार बचत का इस प्रकार उपयोग करती है जिससे अर्थिक भाक्ति के केन्द्रीकरण को रोक कर संसाधनो का न्याय पूर्ण वितरण किया जाय तथा दे"ा के लिए उचित आर्थिक नीति का निर्माण कर बजट के माध्यम से लागू करती है। औद्योगिक उत्पादन बढ़ाना, रोजगार के अवसर सृजित करना, मुद्रा स्फीति पर काबू पाना, उपभोक्ता व्यवहार को बढाना, जीवन स्तर के सुधारने का कार्य बजट के माध्यम से ही किया जा सकता है।

बजट की सीमाएं:– किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए बजट का महत्वपूर्ण स्थान होता है लेकिन इसकी कुछ सीमाएं भी है जिसका ध्यान बजट बनाते समय दिय जाना चाहिए जैसे–

यह सरकार की बजटीय गतिविधियों के विशय में कोई सूचना नही देता है। तथा यह विभिन्न नियायमक युक्तियों के विशय मे भी उचित सूचना प्रदान नही करता जबकि इसकी भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है क्योकि राजाकोशीय आंकडे केवल मोटे समूहों में दिये जाते है। बजट आय तथा धन की असमानताओं अथवा अनेक संवृद्धि चरों जौसे क्षत्रीय असमानताओं, सांस्थानिक संरचनाओं इत्यादि पर राजाकोशीय परिचालन के प्रभाव को भी नही द"ार्ाता है।

निश्कर्श:– निश्कर्श के तौर पर हम कह सकते है कि बजट दे"ा एवं सामाज को गतिविधियों को परिर्वर्तिक करने का एक भाक्ति"ाली माध्यम है। बजट द्वारा राश्ट्रीय आय, रोजगार, उत्पादन, उद्योग, कृशि आदि को प्रभावीत करने का एक साधन है। अच्छी बजट द्वारा रोजगार पैदा किया जा सकता है वही व्यक्तियो के जीवन स्तर को भी उपर उठाया जा सकता है। कराधान तथा व्यय नीतियों से आय तथा धन के वितरण की असमानताओं को न्यूनतम रखा जा सकता है। इसी प्रकार सार्वजनिक व्यय तथा उत्पादन सम्बन्धी नीतियों, निर्धनता, बेरोजगारी तथा धन के असमान वितरण के निराकण और आर्थिक संवृद्धि की दर को तीव्र बनाने में सहायता कर सकती है। बजट सरकार की ऋण नीति, बचतों की दर को बढ़ाने और अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास के लिए साधनो को जुटाने में सहायता प्रदान कर सकती है।

उपरोक्त अध्ययन से स्पट है कि वर्तमान समय में चाहे किसी भी प्रकार की अर्थव्यवस्था वाला दे"ा ही क्यो न हो उसे अपने वित्तीय प्र"ाासन एवं विकास के लिए बजट को अपनाा ही पडता है। इस प्रकार देखे तो बजट वर्तमान समय में हर दे"ा की आव"यकत ही नही बल्की मजबुरी है। वर्तमान समय में सही बजट की प्रासंगिकता है।

संदर्भ ग्रन्था सूचीः–

1–श्रीविश्णु भगवान एव विद्याभूशण– 'लोक प्र"ाासन के सिद्धान्त' छटा संस्करण पेज न0 525 एस0 चन्द एण्ड कम्पनी लि0 राम नगर नई दिल्ली

2–डॉ0 एच0एल0 भाटिया–' लोक वित्त' तृतीय संस्करण पेज न0 220 विकास पब्लि"िंग हाउस प्रा0 लि0 नोएडा (यू0पी0)

3– Lerory Beaulieu के अनुसार–'भारत में वित्तीय प"ाासन'– एम0ए0 लोक प्र"ाासन(उत्तारार्द्ध) पेज न0 58– दूरस्थ ि"ाक्षा अध्ययन समाग्री–दूरस्थ ि"ाक्षा निदे"ालय महर्शि दयानन्द वि"वविद्यालय रोहतक–124001

4–विलोबी के अनुसार–'लोक प्र"ाासन' डॉ0 अमिताभ अग्रवाल पेज न0 361 अग्रवाल पब्लिके"ान आगरा

5–डॉ0 दुर्गा दास बसु–'भारत का संविधान–एक परिचय' (2012) पेजन0226

6–टी0एन0हलेजा–राजस्व के सिद्धान्त पेज नं0271